नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

ज्ञान शांति मैत्री

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

समकालीन वैश्विक संकट में बुद्ध की देशना पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार उद्घाटित

हिंदी विश्वविद्यालय का आयोजन

बुद्ध के रास्ते पर होगी नई सभ्यता- प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 7 मई 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि वर्तमान संकट सभ्यता के कारण ऊपजा संकट है यह नई सभ्यता का निर्माण करेगा और यह महात्मा बुद्ध के दिखाये रास्ते अर्थात दया, करुणा और अहिंसा आधारित सभ्यता होगी। विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अंतर्गत बुद्ध पूर्णिमा के पावन

अवसर पर 7 और 8 मई को "समकालीन वैश्विक संकट में बुद्ध की देशना" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार (ऑनलाइन सेमिनार) का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कुलपति प्रो. शुक्ल की। मुख्य अतिथि के रूप में नव नालन्दा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वैद्यनाथ लाभ थे। इस अवसर पर देश के वरिष्ठ दर्शनशास्त्री प्रोफेसर अशोक कुमार चटर्जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। इस वेबिनार में देश के

विभिन्न शिक्षा संस्थानों के संकाय सदस्य एवं शोधार्थी सहभागिता की। दो दिनों की संगोष्ठी में संबंधित विषय पर देश के विभिन्न विद्वानों के ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है.

कोरोना त्रासदी से उपजे संकट का संदर्भ लेते हुए कुलपति प्रो शुक्ल ने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि तथागत बुद्ध ने अपने संदेश में मानवता के कल्याण की बात कही है और आज के समय में उनकी करूणा दृष्टि ही पूरी मानवीय सभ्यता को नया मार्ग दिखा सकती है. करूणा की दृष्टि से वैरत्व का समापन हो सकता है और दूसरों के दुख को दूर किया जा सकता है . उन्होंने कहा कि इस यत्न में सभी को सहभागी होना चाहिए.

उदघाटन वक्तव्य में प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि हमें कोरोना से बुद्ध की करूणा की ओर जाना होगा.

कोरोना के कारण सामाजिक दूरी जरूर बनाएं परंतु हमें भावना से दूर नहीं रहना चाहिए, बुद्ध का यही संदेश संकट की इस घड़ी में प्रासंगिक है

बौद्ध विद्या के निष्णात, दर्शन के विद्वान प्रो. अशोक कुमार चटर्जी ने अपने श्रव्य संदेश में कहा कि बुद्ध ने कामना को दुख का कारण माना. कामना हमारी कल्पना है और यह अहं से आती है. हमें अहंता को हटाना चाहिए. आधुनिक काल में अहंता का प्रकोप ज्यादा प्रबल हुआ है, अर्थात अहंता का निषेध ही प्रासंगिक है.

उदघाटन कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने दिया तथा संचालन डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया.

इस सत्र के बाद प्रो. अंबिका दत्त शर्मा, प्रो. अरविंद कुमार राय, प्रो. आनंद मिश्र, प्रो. सुशील कुमार तिवारी ने बुद्ध के विचार-दर्शन पर चर्चा की. सत्र का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार राय ने किया.

वेबिनार को गुगल मीट से आयोजित किया गया जिसका संयोजन लीला विभाग के गिरीश पाण्डेय, अरविंद कुमार, अंजनी राय, हिमांशु नारायण, अजय कुमार, विक्रांत राय, गुड्डू रवि वानखेड़े, सचिन ने किया. देशभर से अध्यापकों और शोधकर्ताओं ने इसमें सहभागिता की.